डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के धार्मिक विचार

मेहराब खाँ

सहायक–आचार्य–राजनीति विज्ञान
एस.बी.के. राजकीय महाविद्यालय
जैसलमेर

अगाध ज्ञान के भण्डार, घोर अध्यवसायी, अद्भूत प्रतिभा, सराहनीय निष्ठा और न्यायषीलता तथा स्पष्टवादिता के धनी डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने आपको दलितों के प्रति समर्पित कर दिया था। अस्पृष्य समझी जाने वाली महार जाति में जन्म लेने के कारण उन्हें अपने जीवन में पग–पग पर भारी अपमान और घोर यन्त्रणा की स्थितियों का सामना करना पड़ा था। इन अपमानों और सामाजिक यातनाओं को झेलते हुए वे जीवन में निरन्तर आगे बढे और उन्होंने निष्चय किया कि भारत के अस्पृष्य वर्ग के लिए अमानवीय जीवन की इस स्थिति को समाप्त कर उन्हें मानवता के स्तर पर लाना हैं। इस महामानव ने भारत के दलित वर्ग के प्रति निष्ठा और समर्पण की जिस स्थिति को अपनाया था, उसके आधार पर उसे भारत का लिंकन और मार्टिन लूथर कहा गया और यहां तक कि उन्हें बोधिसत्व की उपाधि से विभूषित किया गया।

धर्म के सम्बन्ध में डॉ. अम्बेडकर के विचार मुख्यतः निम्नलिखित प्रकार से हैं :–

1. **धर्म की आवष्यकता एवं महत्व** – डॉ. अम्बेडकर का कहना हैं कि आदमी केवल रोटी पर ही जीवित नहीं रह सकता। उसको मस्तिष्क भी मिला हुआ हैं, जिसे विचारों की खुराक चाहिए। डॉ. अम्बेडकर धर्म का समर्थन करते थे। परन्तु जिस धर्म का उन्होंने समर्थन किया हैं वह किसी कर्मकाण्ड, प्रपंच, शोषण, अन्याय या भेदभाव पर आधारित नहीं, वह मानव सम्बन्धों में नैतिकता पर आधारित हैं, स्वतंत्रता, समानता, भ्रातत्व, माधुर्य और सौम्यता उसके प्रमुख अंग हैं। डॉ. अम्बेडकर की मान्यता हैं कि धर्म मनुष्य के लिए हैं, मनुष्य धर्म के लिए नहीं। उन्होंने स्पष्ट लिखा हैं कि मैं धर्म चाहता हूं, धर्म के नाम पर पाखण्ड नहीं। जिस धर्म में अपने ही अनुयायियों के बीच भेदभाव हैं वह धर्म नहीं पक्षपात हैं, जो धर्म अपने करोड़ों अनुयाईयों को कुतों और अपराधियों से भी बदतर मानता हैं और उन पर नारकीय मुसीबतें बरसाता हैं, वह धर्म हो ही नहीं सकता।

2. **धर्म का अर्थ एवं प्रकृति** :– अम्बेडकर के अनुसार धर्म समाज के संगठन का एक तत्व हैं। यह व्यक्ति या वर्ग का गुण न होकर मानव वैज्ञानिक धर्म। यह राष्ट्रीयता, देषभक्ति और शक्ति के लिए एक स्त्रोत हैं। जिन सामाजिक रीति रिवाजों और मानव मूल्यों पर आधारित समाज में व्यवहार होता हैं और यही धर्म मानव समुदाय को एक सूत्र में बांधकर राष्ट्रीयता का आधार मजबूत कर निष्कंटक पथ प्रषस्त करता हैं। डॉ. अम्बेडकर का कहना हैं कि धर्म का मूल्यांकन समाज की नैतिकता पर आधारित सामाजिक मानदण्डों द्वारा किया जाना चाहिए। यदि धर्म को जन कल्याण का मार्ग बनाना हैं तो निष्चय ही और कोई मानदण्ड उपयुक्त नहीं हो सकता हैं, धर्म, देष व राष्ट्र, व्यक्ति व समाज को सदैव एक सूत्र में आबद्ध कर अन्तर्निहित शक्ति का संचार करता हैं। इसी से हमारा समाज, हमारा राष्ट्र, मानव जीवन प्रगतिषील, सुषांत सुदृढ व निक्षेप बन सकता हैं।

3– **धार्मिक स्वतंत्रता का समर्थन** :– डॉ. अम्बेडकर का दृष्टिकोण था कि राज्य को सभी नागरिकों को विष्वास और धर्म की स्वतंत्रता देनी चाहिये। उसको धर्म प्रचार और धर्म परिवर्तन की भी स्वतंत्रता कानून तथा नैतिक व्यवस्था की सीमाओं के अन्तर्गत होनी चाहिये। वह जानते थे कि धार्मिक स्वतंत्रता भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं और यहाँ के नागरिकों के लिये ऐसी स्वतंत्रता का होना आवष्यक हैं। यदि कोई व्यक्ति अन्तर्मुखी हैं, तो धर्म उसे आन्तरिक सुख शान्ति प्रदान करता हैं और कोई व्यक्ति बहिर्मुखी हैं, तो धर्म उसे सामाजिक सेवा के लिये प्रेरित करता हैं। अतः डॉ. अम्बेडकर के विचार से धार्मिक स्वतंत्रता आवष्यक हैं।

4– **कट्टरता का विरोध** – डॉ. अम्बेडकर ने धर्म की जीवन में अनिवार्यता और स्वतंत्रता के साथ साथ ही, यह आग्रह किया कि धर्मान्धता और कट्टरता का त्याग करें। धार्मिक भेदभाव दबाव तथा धर्मान्धता का, जो कि भारतीय समाज की मुख्य बुराइयों में से हैं, उन्होंने घोर विरोध किया। बहुत से लोग अपने धर्म की रक्षा और शान के लिये जान दे सकते

हैं, पर धर्मानुसार आचरण नहीं करते। धर्म को लेकर दोगलापन डॉ. अम्बेडकर को कतई पसन्द नहीं था। धर्म मुनष्य के लिये हैं न कि मनुष्य धर्म के लिये। धर्म का काम शुद्धाचरण सिखाना हैं।

5– **धार्मिक संस्थाओं का समर्थन** :– डॉ. अम्बेडकर एक मानववादी विचारक होने के नाते, धर्म की स्वतंत्रता एवं धार्मिक संस्थाओं के प्रबल समर्थक थे। धार्मिक संस्थाएं जैसा कि उनका विष्वास था, राज्य के उद्देष्य की पूर्ति में बहुत कुछ सहायक सिद्ध हो सकती हैं। धार्मिक संस्थाओं को कानून तथा राज्य व्यवस्था के अनुसार भी अपना कामकाज करना चाहिये। डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि में सभी धार्मिक संस्थाएं अपने सदस्यों पर कुछ आर्थिक योगदान करने के लिये नियम बनाने में स्वतंत्र होनी चाहिये।

6– **धर्म निरपेक्षता का समर्थन** – अम्बेडकर ने भारत में धर्म निरपेक्षता के आदर्ष को अपने राजनीतिक विचारों में महत्वपूर्ण स्थान दिया। उन्होने कहा कि राज्य को किसी धर्म को राज–धर्म घोषित नहीं करना चाहिये। डॉ. अम्बेडकर ने धर्म निरपेक्षता के आदर्ष को जटिल नहीं बनाया और न ही उसे सभी धर्म समान हैं संदर्भ में विष्लेषित किया। उन्होंने बडे ही स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि एक धर्म निरपेक्ष राज्य का अर्थ यह नहीं हैं कि हम लोगों की धार्मिक भावनाओं की ओर ध्यान नहीं देगे। वह सब कुछ जिससे धर्मनिरपेक्ष राज्य का अर्थ हैं, यह हैं कि यह संसद किसी एक विषेष धर्म को अन्य सभी लोगों पर थोपने में सक्षम नहीं होगी। यही एकमात्र सीमा हैं जिसे संविधान स्वीकार करता हैं।

7– **धर्म एवं राजनीति का जुड़ाव** – जहाँ तक धर्म और राजनीति के संबंध में प्रष्न हैं, डॉ. अम्बेडकर ने दोनो को महत्वपूर्ण माना, फिर भी वह धर्म को जीवन में उच्च स्थान देते थे। उन्होने कहा कि धर्म किसी के सामाजिक उत्तराधिकार का अंग हैं। उसका जीवन तथा गरिमा और मान उसके साथ जुड़ा हुआ हैं। अपने धर्म का परित्याग करना कोई आसान काम नहीं हैं। धर्म विहिन राजनीतिक सत्ता अधूरी हैं, क्योंकि क्रांतिकारी परिवर्तन धर्म के द्वारा ही होता हैं। डॉ. अम्बेडकर ने ऐतिहासिक अध्ययन एवं सर्वेक्षण द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि धार्मिक क्रांति समाज में मौलिक परिवर्तन लाती हैं।

8– **बौद्ध धर्म एवं बौद्ध दीक्षा** – अन्त में डॉ. अम्बेडकर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि बौद्ध धर्म ही एक ऐसा मानव धर्म हैं, जो मानव–मानव की समानता पर आधारित हैं, जिसमें मानव के दुःखों को दूर करने की व्याकुलता हैं, जिसमें ईष्वर, आत्म और वर्ण व्यवस्था का पाखण्ड नहीं हैं और जिसमें पुरोहितों, पादरियों और मुल्लाओं द्वारा धर्म के अनुयायियों का शोषण नहीं। इसमें तीन ऐसे गुण हैं प्रज्ञा, करूणा और समता जो अन्य धर्मो में दुर्लभ हैं। स्पष्ट हैं कि बौद्ध धर्म अपनाने के पीछे किन्हीं राजनीतिक उद्देष्यों की प्रेरणा नहीं थी, बल्कि इसके पीछे एक दार्षनिक और वैचारिक चिन्तन था। यहा जहां बाहर से शक्ति प्राप्त कर हिन्दू धर्म की जाति प्रथा को समाप्त करना चाहता था वहाँ यह अस्पृष्यों को एक अलग पहचान देना चाहता था।

सारांशतः यह कहना उचित हेागा कि डॉ. अम्बेडकर का दर्षन उस आत्म प्रेरणा, आत्म विष्वास और सामाजिक समता का मार्ग हैं जहाँ भाग्यवादिता तथा ईष्वरीय चमत्कार का कोई स्थान नहीं हैं। उनका हिन्दुवाद तथा गीता दर्षन के प्रति विद्रोह इस बात का प्रतीक हैं कि आदमी ही अपनी स्थिति का नियामक हैं तथा आदमी अपने लिये अपना मार्ग स्वयं निर्मित कर सकता हैं। उनका क्रांतिकारी चिन्तन मानवीय अस्तित्व को नया आयाम देता हैं और उसकी सार्थकता को सिद्ध करता हैं समाज, राज्य और धर्म तीनों के अवांछित बंधनों से शोषित उत्पीड़ित जनसमूह को मुक्ति दिलाना ही अम्बेडकर के चिन्तन और आन्दोलन का सतत् लक्ष्य हैं।

संदर्भ :–

1– अम्बेडकर– एनिहिलेषन ऑफ कास्ट पृष्ठ– 59, 23, 19–20
2– बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर – सम्पूर्ण वाड़मय खंड 1 पृष्ठ– 78
3– बी. आर. अम्बेडकर स्टेटस एण्ड माईनोरिटीज पृष्ठ 23
4– डॉ. पी. के. चढ्ढा – प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक मै. यूनिवर्सिटी बुक हाउस (प्रा) लि. चौड़ा रास्ता जयपुर, पृष्ठ– 318, 319, 320, 321